A Study of Karl Papper's Political Philosophy

कार्ल पापर के राजनीतिक दर्शन का एक अध्ययन

अमृत लाल चन्द्रभाष
सहा.प्राध्यापक (राज.विज्ञान)
शास.लाल चक्रधर शाह महावि. अम्बागढ़ चौकी
जिला– राजनांदगांव (छ.ग.)

कार्ल पापर के प्रमुख राजनीतिक दर्शन ओपन सोसायटी और उसके दुश्मन पर लेखक ने अपने राजनीतिक विरोधियों के खिलाफ खुले समाज की रक्षा प्रस्तुत करता है। इसमें उन पूर्व प्रचलित सिद्धांतों की आलोचना करता है, जिसमें टेलिअलोजिकल ऐतिहासिकता जिसके अनुसार इतिहास सार्वभौमिक कानूनों के अनुसार अक्षम्य रूप से प्रकट होता है। पॉपर संकेत देता है, कि प्लेटो, जार्ज विल्हेम, फेडरिक हेगेल तथा कार्ल मार्क्स के ऐतिहासिकता पर भरोसा करने के लिये उनके राजनीतिक दर्शन को स्पष्ट करने के लिये अधिनायकवाद का समर्थन करते। अधिनायकवाद मानव स्वतंत्रता एवं खुले समाज जिसमें मनुष्य को स्वतंत्र विकास के अवसर से वंचित करते हैं। कार्ल पॉपर लोकतंत्र की रक्षा एवं मानव स्वतंत्रता के लिये ऐतिहासिकतावाद की आलोचना करते है। प्लेटो के दार्शनिक शासक का सिद्धांत मानव समाज को अधिनायकवाद की ओर अग्रसर करता है। कार्ल पॉपर के अनुसार प्लेटो सामाजिक परिवर्तन का विरोधी है। ऐथेनियन लोकतंत्र की शुरूआत 6 वीं शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास विकसित हुआ लोकतंत्र में सबसे पहले ऐथेनियन लोकतंत्र के रूप में इसकी शुरूआत हुई। ऐथेनियन लोकतंत्र में राजनीतिक प्रणाली का कानूनी और कार्यकारी में भागीदारी कुछ वयस्क, पुरूष नागरिक तक सीमित थी। विदेशी निवासी चाहे उसका परिवार कितनी पीढ़ियों से शहर में रह रहें हों तथा दास और महिलाओं को भागीदारी नहीं था। लोकतंत्र ग्रीक demokratia दो शब्दों से मिलकर बना है। demo और kratos जिसमें demo का अर्थ लोग और kratos का अर्थ शक्ति से लगाया जाता है। इस प्रकार demokratos का अर्थ जन शक्ति या लोक शक्ति होता है। प्राचीन ग्रीस में लोकतांत्रिक शासन की स्थापना की अरस्तू अन्य शहरों की ओर इशारा करते हैं। जिन्होंने लोकतांत्रिक शैली में सरकारों को अपनाया है। हॉलाकि लोकतांत्रिक संस्थाओं के उत्थान का लेखा जोखा ऐथेन्स के संदर्भ में है। इस शहर राज्य के पास ग्रीक लोकतंत्र के उदय और प्रकृति पर अटकल लगाने के लिये पर्याप्त ऐतिहासिक रिकॉर्ड थे। लोकतंत्र के विकास में सोलन के द्वारा प्रमुख सुधार किये। जिनमें नागरिकों को एक तरह से परिभाषित किया जिसने प्रत्येक स्वतंत्र निवासी को एक राजनीतिक समारोह में भाग लेने का अवसर दिया। ऐथेनियन नागरिकों को विधान सभा की बैठकों में भाग लेने का अधिकार था। लोकतंत्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। ऐलेक्या या सभा जो सभी पुरूष नागरिकों के लिये खुली थी। एथेनियन लोकतंत्र अपने प्रतिष्ठित खुले समाज के जन्म शुरूआती हुयी प्लेटो को लोकतंत्र के प्रति घृणा ने प्रेरित किया। पॉपर कहते है, झूठ राजैतिक चमत्कार, वर्जित अंधश्विास, सच्चाई का दमन और अंततः क्रूर हिंसा का बचाव करने के लिये कार्ल पॉपर को लगता है, कि प्लेटो के ऐतिहासिक विचारों को परिवर्तन की डर ने प्ररित किया, जो शिष्ट लोकतंत्र या उदार लोकत़ंत्र के लिये प्रयास था। पॉपर के अनुसार प्लेटो अपने स्वयं को कुलीन वर्गों के प्रति सहानुभूति रखते थे और आम आदमी के प्रति उदासीन थे। पॉपर को संदेह है कि प्लेटो अपनी खुद की वैनीटी का शिकार था और खुद शासक बनने के लिये दार्शनिक शासक की अवधारणा तैयार किया। द ओपन सोसायटी एण्ड इट्स एनिमीज में दार्शनिक कार्ल पॉपर द्वारा राजनीतिक क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कार्य किया है। जिसमें लेखक खुले समाज की रक्षा के लिये आवश्यक तर्क प्रस्तुत करते है। कार्ल पॉपर अपने राजनीतिक विचारों के आधार पर किसी तरह से अधिनायकत्व को समाज के लिये खतरा बताता है। कार्ल पॉपर ने प्लेटो के दार्शनिक शासक जिसमें दार्शनिक राजा सर्वेसर्वा होता है, कानून से भी उपर होता है। वह कानून के नियंत्रण से भी बाहर होगा। समाज के सभी लोग दार्शनिक शासक के अधीन होंगे। उनके आज्ञा का पालन सभी को अनिवार्य रूप से करना होगा। इस तरह से समाज के अधिकांश लोगों को प्लेटो के दार्शनिक शासक के अधीन कर मानवीय विकास को रोकने का प्रयास किया है। इसी तरह जार्ज फ्रेडरिक के अध्ययन से हीगल के राजनीतिक दर्शन पर अध्ययन से ज्ञात

हुआ कि हीगल युनानी दर्शन में रूची लेने लगे। प्लेटो की तरह हीगल का विश्वास है कि व्यक्तियों का सच्चा विकास राज्य के अंतर्गत ही है, उनका मानना है कि मूलतः व्यक्ति राज्य की सृष्टि है, राज्य के अंदर ही उसके अधिकार है। इस कारण उसने राज्य को पृथ्वी पर महामानव की अवतरण कहा। प्लेटो के सर्वसत्ताधिकारवादी राज्य की कल्पना का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। प्लेटो के विचार को ग्रहण कर लेवयान्थन की विचार प्रकट किया लेवयान्थन एक महामानव है। जो राज्य के रूप में प्रकट होता है। जो सर्वशक्तिमान है, कहकर मानव विकास को, मानव की स्वतंत्रता को, उसकी आत्म सम्मान को हम मानवीय गरिमा का कुठराघात करते है। जिससे हमारी मानव समाज की उत्थान की दरवाजा बंद हाने लगता है। कार्ल मार्क्स ने अपनी साम्वादी विचार के आधार पर ऐतिहासिक परिवर्तन में मजदूरों की तानाशाही की विचार प्रस्तुत कर खुले समाज की मार्ग को अवरूद्ध कर देता है जो मानवीय स्वतंत्रता एवं गरिमा के विकास को सीमित करता है।

शोध प्रविधिः—इस शोध पत्र के लिये शोध सामग्री अधिकांश रूप से द्वितीयक स्रोतों से ग्रहण की गयी है। इसमें ऐतिहासिक विश्लेषण व वर्णात्मक दृष्टिकोण के साथ—साथ शोधकर्ता ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को भी स्थान दिया है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र—पत्रिकाओं व समाचार पत्रों से प्राप्त की गई है।

उद्देश्य :—

1. लोकतंत्र के प्रति जनता को जागरूक करना।
2. लोकतंत्र के लिये आवश्यक परिक्षेत्र एवं पारीस्थितिक पर्यावरण तैयार करना।
3. सत्ता की तानाशाही पर रोक लगाना।
4. खुले समाज की अवधारणा को स्पष्ट करना।
5. परम्परागत समाज हमें किस तरह से विकास की ओर हो रहे अग्रसर को अवरूद्ध करता है, इसे स्पष्ट करना।
6. जातिवाद, धार्मिक संकीर्णता की भावना, रूढ़िगत समाज, सम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद, परिवारवाद, अभिजनवाद आदि सभी प्रजातंत्र की उत्थान में रोड़ा है।
7. समाज में मानवतावाद की स्थापना करना।
8. नागरिकों में आत्मसम्मान की स्थापना करना।
9. समाज में जनता के महत्व का समर्थन करना।
10. स्वतंत्रता, समानता एवं भाईचारे की भावना में अभिवृद्धि करना।

कार्ल पॉपर का जीवन परिचय :— आस्ट्रियायी ब्रिटिश नागरिक सर कार्ल पॉपर को बींसवी सदी के महान दार्शनिकों में गिना जाता है। कार्ल पॉपर का जन्म 28 जुलाई 1902 को वियना शहर के एक उच्च मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। उनके जन्म के समय तक, उनके गृहनगर को पश्चिमी दुनिया में संस्कृति के प्रमुख प्रतिपादकों में से एक माना जाता है। वियाना का सांस्कृतिक वातावरण, जिसे पॉपर ने उजागर किया था। यह माना जाता है कि पॉपर के माता—पिता दुनिया के सामाजिक और राजनीतिक विचारों में गहरी रूचि पैदा करने के लिये जिम्मेदार थे, जिसने उन्हें दर्शन के क्षेत्र में ले जाया गया। उनकी मृत्यु 17 सितम्बर 1994 में 92 की उम्र में हुई।

खुला समाज :— फ्रांसीसी दार्शनिक हेनरी बर्गसन ने खुला समाज शब्द का निरूपण किया। उन्होंने बताया कि बंद समाज के रूप में बर्गसन ने वर्णन किया कि कानून, धर्म तथा परम्परा एक तरह से स्थिर है। उसने सुझाव दिया कि अगर समाज की सदस्यता के सभी पहचान गायब हो गये तो दूसरों को सामिल करने या बाहर के लिये बंद समाज की प्रवृत्ति बनी रहेगी। एक खुला समाज गतिशील समाज होगा इसमें लचीला या उदार पन झुकाव वाला होगा। कार्ल पॉपर ने पारम्परिक युनानियों को खुले समाज के प्रति आदिवासी वाद से धीमी गति से संक्रमण की शुरूआत के रूप में और पहली बार कम व्यक्तिगत समूह संबंधों द्वारा लगाए गये तनाव का सामना करना पड़ा। आदिवासी और समूहवादी समाज प्राकृतिक नियमों और सामाजिक रीति रीवाजों के बीच अंतर नहीं करते है ताकि व्यक्तियों को उन परम्पराओं को चुनौती देने की संभावना न हो जिनके बारे में उनका माना है कि उनके पास पवित्र या जादूई आधर है। एक खुले समाज की शुरूआत प्रकृति और मानव निर्मित कानून के बीच अंतर द्वारा चिन्हित होती है नैतिक मूल्यों के लिये नैतिक मूल्यों के लिये व्यक्तिगत जिम्मेदारी और जवाबदेही में वृद्धि होती है। कार्ल पॉपर ने तर्क दिया कि व्यक्ति के आलोचना और मानवतावाद को दबाया नहीं जा सकता, क्योंकि लोग जागरूक हो रहे है। इसलिये बंद समाज में वापस आना असंभव है। आज का आधुनिकता विकास आधारित होता है इसमें औद्योगिक समाजों को अपने सदस्यों से साक्षरता, सामाजिक गतिशीलता की आवश्यकता होती है। अमूर्त समाज सामाजिक संबंधों के व्यापक प्रसार की मांग करते है। लोकतंत्र ही बिना हिंसा के और बिना रक्तपात के नेतृत्व परिवर्तन के लिये एक संस्थागत तंत्र प्रदान करता है। खुले समाज में राजनीतिक स्वतंत्रता तथा मानव अधिकार खुले समाज की मुख्य आधार होती है, एक खुले समाज को वैकल्पिक दृष्टिाकोणों के लिये खुला होना चाहिये। सांस्कृतिक धार्मिक और बहुलवाद

हमेशा सुधार के लिये खुला होना चाहिये, क्योंकि मानव ज्ञान कभी पूरा नहीं होता, हमेंशा चलते रहता है। यदि हमें मानव बने रहना है या रहना चाहते हैं, तो इसका एक मात्र रास्ता खुला समाज है। हम कभी भी पविर्तन की बयार को रोक नहीं सकते। जो समाज खुला या मुक्त हो, अर्थात जो नये विचारों को अपनाने के लिये तत्पर हो उस तरह की समाज में विज्ञान और स्वतंत्रता दोनों पनपते हैं।

उपसंहार :– कार्ल पॉपर का विचार है, कि मानव समाज को जितना ज्यादा स्वतंत्रता मिलेगा उतना ज्यादा विकास होगा। हम मानव विकास को किसी रूढ़िगत परमपरा में बांध नहीं सकते। यदि ऐसा करते हैं तो विकास का बयार थम जायेगा। जैसे–जैसे हम आधुनिकता की दौड़ में शामिल होते है, उतना ही आजादी की जरूरत होती है। किन्तु कुछ राजनीतिक स्वार्थवश हम आज भी समाज में जातिवाद को बढ़ावा दे रहे है। धार्मिक संकीर्णता की आड़ में अपनी रोटी सेकने के काम करते है। आज भी धार्मिक उन्माद फैला कर साम्प्रदायिकता को बढ़ावा दे रहे है। भाषावाद एवं क्षेत्रवाद भी इसी कड़ी में आता है। आज राजनीति में चुनावी उम्मीद्वार जात और धर्म को देखकर निर्धारित करते है। इन सब के कारण हमारे समाज में वसुद्धैव कुटुम्बकम का परिकल्पना परिलक्षित नहीं हो पा रहा है। अतः हम सब को कार्ल पॉपर के ओपन समाज की विचार को समझना होगा।

संदर्भ ग्रंथ :–

1.https://www.hmoob.in

2.https://yesthergpuhelps.com

3.https://wikicareer.in

4.https://hi.m.wikipedia.org

5. the open society and Its ememies- karl popper

6. the philosophy of karl popper

7. karl popper philosophy and problems